

त्वेतिहितानिवसकुनांनि॥गामाविशत्यवनपितकरूपकावा॥
 धोलागतिस्सहतामिवकालनाति॥नवंकथंविदन्मार्गमदि
 तिरुषूक्तानेषुगत्यमविलसतगतिकजातितारुनिनंमथितम्
 क्कममृगिमिगुंश्रुवंकसातिस्सहसासन्नजवनित्यं॥सूहाकद
 ग्यदाविति वक्ति कृत्याप्रपन्नय॥नवांसर्वभानिन्नस्तद्वृत्ताजीव
 यागना॥४॥इति साहजीद्राकतुकं वयावराभक्ति कायाविववित्यम्
 तं सहत्यतेनंविषयवद्वृत्तस्य संवदनं वृत्तस्य सापतनं॥करवनागु

अश्वमेध

AS-A ARCHIVES

1890

I

मादिबुधविदि

या हा हवित्रा कतुक व हा ग्याथ यत क हा व्या न चत कल्क या ड नव
 कन रू न ना डि वृक्ष या ड वला न ना नं वा व ॥ ॥ नादि गि र्व दो वृत्
 वान सिद्धि वृखा ग्व न मुः षत् कृ कृ सा ध्या ॥ ॥ ॐ ति नि दान व
 नि कृ म ना दि वृक्ष वि कि त्सा ॥ ॥ उ द म्ब द्वा गु ल कृ त् वा र्व त ॥ १०१
 पि टि कां कि कृ त् ति नां ह गं द ना रू यः स व यं व वि धा म त् ॥ य
 र्व च यं र्व र्व ल स्य वे द ना क ति वा ग्य या उ द कं लु स्य आ हा हे स्ता
 दः या म्बा धू य ड व ॥ क र्वा य र्व कृ ज ति का वि ता नि ल सृ न द ग

विटिकां कलागिया उपकुल्ल्यांक मूषे त्रिदोत्र नं लज वति नान
नह नहि न्ना वाहि नित तो गभा मूत्र पत्रिष न त सा वृत्ते न ल के ४
सत या निकां व द ॥ ७ प्रका पल ४ यित मं का य कला त्रि कां यि ७
कां मता गतां त दां लु या कां हि म पृ ति वा हि नी र गं नु नं वृ र्क जि
ध नं व द ॥ कलु य ता द्य न मा वि क यि ना मं द व द ना ३ ॥ ७ ॥ व ता
सं क र ३ ४ प्र ति ग्रा वि र ग न्द या ॥ त्रि रु सा न ग मं र कं यि ७ ला
हि य प्र प नं र ग न्द न नि रु ला शु दू ४ वृ ल ह नं व ना व दू व र्क

राजा मा वापि डि का ग्म सुना म मा सु व का व न व ला जी सं का व न का
 मत ॥ कृता कृति ॥ पा य ग ना वि व र्द्ध न सु य कृ ना सु ॥ कु म या वि
 दार्य न प्र कृ व न मा ग्न मन क क्षा मू र्धे वृ जे मु द् वा नि र ग न्द ज व द ॥
 धा न ॥ सा ध यि तु द् ॥ र वा सु र्व उ व र ग न्द ना ॥ त य सा ध त्रि षो षो न्ना
 ॥ कु त ज ग्ग वि हा ष न ॥ कृ ष तृ वृ ति ला द ति मा ग धा सु ध व म धू
 व ज नि ति रु ना तु न्दु हि तं वृ ज र ग न्द ॥ पि ष ति ले न्द म धू के ग्ग
 सु जी त व र ग न्द व पु न धा य सु कृ व ष द ना व ति ॥ हा मृ न ल द

१००

राजा मा वापि डि का ग्म सुना म मा सु व का व न व ला जी सं का व न का
 मत ॥ कृता कृति ॥ पा य ग ना वि व र्द्ध न सु य कृ ना सु ॥ कु म या वि
 दार्य न प्र कृ व न मा ग्न मन क क्षा मू र्धे वृ जे मु द् वा नि र ग न्द ज व द ॥
 धा न ॥ सा ध यि तु द् ॥ र वा सु र्व उ व र ग न्द ना ॥ त य सा ध त्रि षो षो न्ना
 ॥ कु त ज ग्ग वि हा ष न ॥ कृ ष तृ वृ ति ला द ति मा ग धा सु ध व म धू
 व ज नि ति रु ना तु न्दु हि तं वृ ज र ग न्द ॥ पि ष ति ले न्द म धू के ग्ग
 सु जी त व र ग न्द व पु न धा य सु कृ व ष द ना व ति ॥ हा मृ न ल द

ॐ सि म धू ध सु ता सा द इ न न स्यं वा या ॥ त ग न्द व स न डी का व द ना
 ना डी षा ॥ वा त मृ त्र प्र ति षा नि कु म य ॥ मु क म व व र ग न्द ना ॥ न व
 के मु ना सु य कि त मा तु लं ॥ ॐ ति नि दा न य वि कृ म र ग न्द व वि
 कि ला ॥ ॥ ह सा ति धा ना न व न्दं क धा ता द धा व ना द ह्यु य स्य व ना धा
 या नि प्र दा षा व र र्व की गृ ह्यं यं वा प दं ग्ग वि वि धि य वा न ॥ सं ता द र
 द ह्म न ने ॥ सु कृ के ॥ ह्म टे य व स्य व ना प वं गे दे ॥ पी ते व कृ कृ द
 ह टे ॥ स दा दे ॥ पि त न न के ॥ पि मि ता च ला से ॥ सु कृ मु ने ॥ अ थ य

नेर्महहि ४ गुकृर्धने ४ अवयुनेकरुत॥ नाताविधसावत्रज्ञाययत्र
मसाधमादुमिमसापदंशं॥ ॥ तिथौदोपदंशया॥ ॥ ॐववतस
प्रगुलिधप्रियतुतयेववनकूमात्रसुपगुलितद्वल्यल्यलानि
वत्रसायादिविषामास्तिमधूकंवपियगव॥ लाक्राकात्रियक १०८
लाधुंवन्दनप्रिवृत्तुकायात्रगानकिकृतानेववसुमृत्तुनयषय
श्रुमात्रसिमधुदुधेसंजप्रसुविवायय॥ सर्ववृत्तहजंतंमंतसि
द्विविधानतउपदंशहजसिधुषमृनिहि ४॥ यत्रिकीकितं॥ ४

वृत्तियाहनवातिमियाहनश्रवजहनकलंजहनवसयतिउरुस
सकम्मानश्रितियसुश्रवपू० स्तिमिदिपयंगुलाहानमसाठसिं
अहनगुलादग्रीषंदुतनठातसमरागवनसयाथाननेस्यकर्व
१५५३प्रमानजिमधुदुधकनवृत्तसमस्तुवृत्तभावकरुडाधुवक
नसिद्धिनडावउपदंशभाकधस्यमृनिनज्ञाया॥ ॥ विगीर्लमांसं
क्रिमिरी ४ पुत्रवगंमृक्कावसर्वपत्रियजयय॥ संज्ञातमात्रुअत्रज्ञ
तिमृट ४ कृयात्रसायाविषयप्रसक॥ कालनलमर्थकृमिदाहया

के प्रवृत्तिं जीनिष्ठासिद्धयतः सततं ॥ अंकुशे निव संजाते च यश्च यत्रि ससि
 ते ॥ कुमनश्च यत वक्ति सुामुद जिष्वा यमा ॥ काषस्मात्वं न न जा ना
 इविकित्साति दाषजा ॥ लिंगवतित्रिगिर्या तानि गभं नूति वा यत्र
 नूति निदान कुमं उ य दं स वि कित्सा ॥ ॥ अ क्र मा सरु अ वृद्धि धानि ॥ ०६
 गच्छति मधयी बाधय सु स्य जा यत द ग वा क सु खो व शु क जा ॥ ॥
 उमेर सन्धय संस्का ना शु क नि र्गु न ह तु का ॥ विडि का शु ष्य वा ता त्यां सु
 या स र्व य का तु सा ॥ कथि ना विष मे ह र्ग न वा य ना वि वि का र वा ॥ शु

केयु ल्प जितं गभं ज्येष्ठितं नाम त क र्त्ता ॥ कु हि का न क पि लो वा
 जां म वा सि नि ला ॥ ॥ अ त वा ह न डि मि द्या य था प्रा क्ता वि
 व कु नं ॥ म दि तं यि डि तं य म् सु स न दं वा त का य त ॥ प्रा नि ष्यं ट गं
 सं मूटे सं मूठ पि डि का र व ॥ दि द्या वं कु नं ष्व पि डि का दी युं क म
 धा त मु सो सा थ म ध्व क र्त्ता र गु णां ॥ द नां ता म ह र्त्त क ॥ पि डि का
 वि ता यि डि का यि कु गभ नि त स र्त्त य य र क र्त्त क स र्त्ता ना र्त्ता य
 कु न क ति सा ॥ स्य ग हा ति मु क न य क्ता नि तं शु क इ वि तां ॥ मू ग मा

षोडशमात्रकात्रकपिकाद्रवावयाद्याविप्रधोरुमानामशु कडिर्दुनि
 निरुजा॥ विदे प्रभु मुखे सिंजे विप्रयस्य समंततः॥ वातश्चानित
 जाद्याविः सद्रूपः गतयानिक॥ वातयितं कनाहय मूका कोहन
 पादवान॥ कृष्णं स्रुतेः संनकातिः विडिकाहिनिपिडितं (य ११०
 स्यवसि नृजस्योग्रहयंतकाजितवृद्धं॥ मांसं दाषन जानियाम्य
 नयस्य मांसानियमस्य सवाश्ववदना॥ विडधिसुनिपातनयथा क
 मितिनिदिशकृक्कानिविग्राथयवाशुक्रानि सुविखासीवावीदि

शुक्रदावाविक्कसि

तानियंवत्तांशुमदु निवद्वजवत॥ कालानितरुत्वा मासानिग्रा
 र्थनयस्यदहितसुविधातसुमन्नामुताविद्यानिलकासिका
 इवीसुत्रस्यशुद्धि गृहधूमनिग्राहगेतेलमत्यजनं वक्रमदु
 नागविनागतं॥ ॥ गुरुत्वतिष्ठति मिदि पाथनकसि कंवहु
 यदि मिव कसि यतनवकन षूडाडासयनया डनसुमसुसि
 गनाडाव॥ तत्र मात्सा वृद्धयस्य मासकै पोश्वयस्य ताः विदुधि
 श्वनसिंधीनि यवसु सिलकासक॥ ॥ तिनिदानकमशु

कदापि विदित्वा ॥ विद्या न गुर्वधर्षयतां पापकर्मैव कुरु
तां ॥ वाता दय मृयो दृष्टा सुदृक् मां समं वृत् ॥ इषयं किं सुदृष्टा ना
सक को दृष्ट संगृह ॥ अत कृष्णानि गायने सक र्थे का दजे वव
कृष्णानि सक धा धा ४ पृथक् ४ समा ग म ॥ सर्वे धारि त्रिधा १११
षष्ठ्यपदस्य विकं हित ॥ अति सिग्गं खत्र सार्जस्य दस्य दवि
वर्जता ॥ दाह ४ कं लु स्या प सा द ४ को ले न किं सु मा ॥ पुष्प ना म वि
कं ३ सं जा द्या त्य किं जि प्र सि ति ॥ नृ जा ना म यि त् कृ त् य नि मि त्

स्या पि का य न ॥ नाम ह धो रुज ४ का क्का कृ व ल कृ न म गृ ज कृ क्का
त्र म क या सा तं य दृ कृ प व न न ॥ क यो सं जा द व कृ ल त कृ कृ वि
ष सं स्मृ तां ॥ रु द्रा रु ला ग कं लु ति ४ य त्रि तं ना म यि ज स उ दं म ना
रु ना रा सं कृ व मा द व ल व द ॥ अतं व कं सि तं स्था नं सि ग्गं म र्द
त्र मं लु तं कृ कृ यी म या य स ग कं कृ व मं लु त म्वा तं ॥ क र्क गं व क
प र्थि क मं क ग्मा वं व व द ना ॥ य दृ कृ जि कृ सं स्था प म कृ जि कृ त
मा दि जा ॥ ७ सं अ तं व कृ प र्थि त पृ लु ति कं द सी प मं ॥ सा स्म र्थ न

स नागं च प्लुती कं त इत्यतः ॥ अतं ता मुं त द् वयं त्र जा वि मुं च ति ॥
 प्रायश्च नसित सि ध म सा व क सू मा य मा ॥ अत्ता क नं ति का व न्ने
 स या क ती वृ वे द ना ति दा ष लिं गी त क्ख वं का क गं मे व सि ध ति ॥
 अथ द नं महा व क्तु ज ल्म स्य सक श य मं त द व क्ख व र्मा र्था व ह २१२
 पं ह सि व र्म व ॥ अथ वं कि न र व ल स्य र्गं य त्थं कि ति म स्म तं ॥ वे क
 दि कं या नि या दं स्मृ ट नं ति वृ वे द न ॥ कं इ म ह्री स ग र्गो ष ग लु न
 स स कं वि तं ॥ न कं स ग्गु सं कं च म त्त स्मृ टं य द स ल्य पि ॥ त र्ध मं द

स मा र ग्ना त म स्य र्गं द म च्य तं ॥ गु ऋ वं क्क ष पि ठि का ४ ग्ग व ल्य ४ या म
 त्वा क्क ४ कं ल म ल्य ४ स दा हा ॥ से व स्मृ टे स्ती वृ दा हे त्र य ता र्क या ४ वा म ४
 क क्क त्र ग्गु ति ज ग्ग ॥ स्मृ टा ४ स्या वा त्ता सा वि स्मृ टा स्य स्मृ त्त र व ॥ न
 कं स्या व स दा हा ति ४ स त्र स्या द द् व व र्मा ॥ स कं ल ४ पि ठि का स्या वा व क्क
 ग्ग वा वि र व्धि का ॥ र व नं ग्ग वा त्र ना त्र क्क वा त कं स व द ना ॥ पि ला प्र
 क पि ता दा ह ना ग ग्ग वा ति तं म तं ॥ क र्क क्क दी र्घ न मि ग्गं स क ल ४
 र्ग ल्य ग्गे न वं ॥ दि लिं ग दं दं क्क वं ति लिं गं स नि पा ति कं ॥ स क्क

वेवर्त्त मंगल कृष्ण सङ्ग जामर ॥ लक्ष्मी पात्रा सह षष्ठ्य ह्यदस्याति
 प्रवर्त्तनं कर्त्तुं विप्रय कवेव कृष्ण भवति तस्य ग्री ॥ वेवर्त्त व कं ग्य
 यम् कार्कशं पिडि कागम ४ तं दुस्तर ४ स्ति न्येव कृष्ण मां स्य समा
 ग्री ॥ ४ ॥ कोष्ठां गुमिदया जानां संह द कन सूर्ये लं मय स्कान
 गनालिंग यवो कानि वन दया ॥ ७ ॥ नामा रं रंग दिना ग ११३
 दन वृत्ति मि स र व ४ ॥ स्वनाय घा ग ११४ र वेद स्ति मङ्गा समा
 ग्री ॥ दय लो ४ कृष्ण बो हू त्या इ व भवति तं गु कया ४ ॥ जे द

पर्यंत या जाता ह्यंत दपि कृष्ण व ७ ॥ सा ध्रुव ड क मा सं ह्वा
 तं भूष्मा धि कं व य ७ ॥ मद सि द्द दं या व्य व द्धं मजा स्ति सम त ॥ वि
 सवनं प्रयात कं वं तृ वृ द नि रु ल ति के ॥ कृष्ण या का थ वा शु त ल
 उत द नि ति रु ला थ त या उ ल य ॥ खदि न ति रु ला नि स्य प टा ला
 म त वा भ के श्रु ष्ण ना यं जं कृष्ण कं लु वि ह्ना ट कानि व वि सूर्य पा
 मा कि ति मं ना गानि क मं यि का ॥ य ष्म न ति रु ला नि स्य का न द
 यत गु उ गु आ द भ थ या ता का थ दा स्य ना न न कृष्ण नं या स्य क कृ
 य ३ ह २

मंमभरुतिविस्वककुकिरिमः मसुत्रिका आदिन भाव क॥ ख
दित्ता व क ॥ ॥ रुसुत्रिकात्रिकुष्टपठासपत्रुः मयप्रिया साननना
ऊवृक्तः मंजिष्टं पात्राग्रविडिं गति कानि मद्यं चंदन दात्र म
वृद्धा कसिं ग क तु का घ ना वः महा कखा आऊयं नि प्र सि ध्वा ११४
सर्वेषु कृष्टेषु वृद्धेषु आ कं सि ध्वा य पा मा व नि हं नि सं घा ॥ ॥ प्रि
रुता निम्बः वा ता द व तिः कृ टः ख य नः आ द गः तं ग ला जः दि गं
रु न म ञ्च थिः वा ता द ध्याः हा क वि स सि र्वा दाः रु स दि मि व कि सिं

ग्रीखंद द व दा नः स दा सः त्रिकं थ कि त्रिः ॐ रु ऊ वः क
तुकः मस्तः गतः चत को थ दा स्य लं रु तं सु मस्त कृष्ट मा क
सि ध्वा पा मा क कृ मा क ॥ ॥ कनिष्ट क षा य ॥ ॥ मस्तं किं ग म जि कि
का ना रः विजं रं व कृ म ई कोः त क यि वृष्ट पा यः द द्र कृष्ट वि
ना म नं ॥ ॥ मथ य त क या हा ॥ नृ ष यः अ न नि स्या त या वः च तं
आ न ति न न स्यं स प या दंः मि ना व क कृ मा कः ॥ ॥ का ग म ई क
वि जानिः मू न का नां त ॥ ॥ थे व वः गं थ यो वा त मि मू लः सिं ध्वा ना

पञ्चमोऽध्यायः ॥ असंति स्यान्त्यापः ॥ नयः पाधन कु कू मः च न म स
 सपतः सिधया पन मोष धं ॥ धृत्तुल विज क र्क न मान कं क्रान
 वानसा ॥ कतु ते ल वि क्वं वः द द्द हं त्या धि पा दि का ॥ ॥ दू ध न या प
 क र्क या द न मान रु क न स स मिः थ न पु का वि क न ख द न द द्द ११५
 मां वि पा दि का नं भा क ॥ ॥ दू ला दू ७ द्वा क या ॥ ॥ सिं दू न हे ध व सि
 कं मू हा क्रि न सं म लि तं ॥ न त के लं वि प कं तुः क र्क स र्व वि ना स
 नं ॥ ॥ सिं दू नः स धूः जि त खा न द्द ॥ थ न व क न षू द न स म स क

कू भा क ॥ ॥ सिं धू ला दि ते न ॥ ॥ न कू मा न ह वि ड दः अ र्क त ग न
 म व यः क न वि न व वा क र्कः मा र्क न न क वं द नः मा न ति स क प
 क्रि य मं जि षा सि धू वा न कं न खा म र्क व ला नू ग म न वि य स्या पि
 य त र व ॥ व तु गु न नै ग वा मू त र न य मू वि या य म ॥ वि त्र वि ल
 ट कि टि मं की ट न रा वि य र्चि का ॥ क र्क क र्क वि ना य य वृ षा वि य
 दू षि ता ॥ वि ष नै ल मि दं ना मः स र्व वृ षा वि षा ध न ॥ ॥ क लं ज
 ह न तिः मि य कि सिः अ कू य त्रः त क ना जः क न वि लः व लाः टै कः

वपतकाः नक रं नः जि नि स्या नथा नः दृति डानः म अ थिः वा
 स्या द्या लिः थत वा रु द्धि क्ष नः य स पु थ न या व्य उ ग्व मृ तः व क
 न रुं द्धि व नः वि त्रु कृ ष या हा य न या क याः दृ तिः कि ति मः आ
 दि नं ला वः तु दा वः कृ ष याः द्या न क रुः वा स्व के रुः आ दि न वि का ११०
 य ग्व न द्या न सः य स ना ग न पं वां ग्य दा का मा क थ वि ष तै त न स
 म रुः द्या नं सा ध न प ॥ ॥ वि ष तै त ॥ ॥ त ला ट का नां कृ उ व क्री
 द यि त्या वि य कृ न ४ ग क ला कृ द वं वा यिः त द धं दृ त सं यू तं

कृणिसंस्तानाः पिरिकाः स्युर्न नूनि का ४॥ आसां पूर्वकानः कलुष्मागुरो एभ
नरिक्कुम ४॥ मसूनया एभ उर्थी. आवनन. गवककुनाम. मसूनि काधय
थया पूर्वनूपकान भंवा स. भंवा २ पाथं ठय. का सना. नगि मूइ. डाका हा
नवंय ॥ ॥ स्वचिराथ ४॥ सर्ववर्ण. नगनागम सुथेवच ॥ ॥ सेवमानिव
मिखाका रु. वनिमहिनिव ॥ ॥ स्ताना ४ रु. सुानूपम ४ रु. गिवददनया निगा ४॥
कथिनाग्निनया काग्वरुवत निन संरवा ॥ ॥ संध्यास्ति पर्वनांतद. कागकं वा
नगिजुमा ४॥ एभ व वाख सुडिजा नां रुकाया नवि संयुता ॥ नफा

४पीता४सिता४सुता४सदासासीवृदना॥विद्वदाञ्चर्ममधश्चतृ
 कात्रयत्रिस्तथा।मषपाकाएक्रियाकंश्च०अत्रतिवसुदात्रनं॥
 वक्रजासांतवेन्संतविकात्रपित्तवक्रलंकदृष्टसकोसेमित्यं
 जिवात्रकृष्णग्रहेत्रवं॥अत्रा४सिग्वा४संस्तुता४कं४नाम
 दवेदना॥४सुसुनिका४कहाकाचवित्रयाका४यकीलिता॥
 नीलाश्विपितीविस्तीनांसधनिमामहात्रुजवित्रयाका४पति
 ग्रावा४प्रसू४सर्वदोषजा॥क०या॥अविस्त्रुताप्रसाधानति

१२६

कुरुगजविक्तिरा

वक्रात्रसंयताद्युतमुक्थितययगु७७७७अत्रजय
 हं॥यश्चत्रतिवयनधसियाति॥मुंथि॥यमसक्रासयानिथनधत्रय
 उनत्यनकं७७७७उंमनास॥दोभेहोत्रकपर्यन्तसुकाकीतिवृव
 दन४॥कलुमानवनकाजी॥॥००००तिनिदानपत्रीक्रमकूडयामवि
 कित्ता॥॥कंकर्णयत्रयोसुखोसुप्राकानीसुवेदनोदास्यतयमि
 पाशुन०डा०शोमान्नकोपत॥वियनपिजीकातिश्चससूजाति४समं
 कत४सहयकोपिदि कोपितालाशोवपिकता॥सवज्जोरिसुवीयंतयि

टिकातित्रयदने तव तमु कदा दो शो विष्णु ओभी तओ गुत्र ॥ सकृत् कृ
 सकृत् सी तोर कृच्छ्र तो त ओ व च । सन्नि पा त न विदुया व न क पि टिका
 चि तो ॥ ख ई सै रे व र्णा लो पि टिका ली वि पि डि कौ तो । न को य स र्षो
 अधि ओ पै अ यं त ४ अ नित यु लो ॥ गुत्र म् स्तो मां स द्दो मां स यिं यु व द् १५०
 उ नो ज न व र्णा प्र म क्ति न र म्मा र य ता म र्मा ॥ स र्पि र्मा नु स सं का
 मो म द सा कं यु ओ गुत्र डा दो य र्थ व दि य्वा त स्तु त त म्मा रि द्या त त ॥
 से न क र्मा त क स कं यां सा अ यं मु व ता र्णं तथा व र्णा न स द्द ह म् द स्य

स कृत् कृ द्वा भी स प ठा स म्म द्द त्रि त कि ति का क त्र दि
 श्री । त र्मा ॥ य द्वा द्वा य र्द्ध म्म यं द मे ष क्ता र्थ पि व त्या क द्द न म्म ष स्या त्
 ः कृ ति डा न द्वा द्वा ष स द प र्मा म्म द्द न र्वा द्वा ः कृ तु क ः कृ मि मि
 दि द्वा यि त्र सि या द्वा गी र्वा न्द क्ता थ द्वा स्या द्द न म्म ष या क कृ थ या
 क कृ द्द व ॥ मा क्ति कं मा द्द न्ग म्मा ४ प र्मा व स म ल गि कं र कृ य द्द क
 हो लो ग्य म्म ष गं ध वि ना स न ॥ ॥ क र्ति क्ता न स म्मा द्द न्दु ल्य या द्द न स्य
 कृ थ हो लो ग्य या न्म थ या न म्मा क ॥ ॥ द्वा गो र्वा त्या र्मा लि तं व म्मा र्मा क

स्मान्मवक्तुं। द्ग्वंभानि स कृष्णालिप्य कृदनिमृदुं निवा। द न मांसा
निगिर्य नय वंभिय य प स स्रत्रं॥ गीता दा मांम स्या धिवा त श्वनि
संरवा॥ श्वय थुई न म स वः स्रजा वात करु ज क उ ४ सा सा ग्र वी
स विह्वय श्वनि तो नाम नाम ग॥ दं ना श्व सति विह्वय ग स वा य व १५१
दी र्घं तय सि स सर्व जा धा धिर्म स शे गि स संद्वित॥ ॥ दं न मा सानि
गी र्घं नय सि स्री व तिया य स्रुः पि ला मृ क र जा धा धि र्घं य य द
प्रति स ४॥ ४५॥ द वा द वा क श्व तां त्यां दं द श्व सन्ति य य सि न सा

य ५५॥ ५६॥ कृ कृ ता ग द॥ ॥ दं न श्व द न मा स वः स्रत्रं ता जायत
म स्री हा नः॥ ५७॥ दं ता श्व व ला ४ स र्व द हो ति द्या त उ॥ मा नू त ना धि
का दं ता जाय त नी व व द न ४॥ ५८॥ दि व र्ध न स ह्रा सी जा य त स्र कृ सा म्य
ति॥ ५९॥ न ने न ने ४ य क र त वी य ई न मा॥ मा ग्री ता ४॥ क सा ना चि क
गान्द ता क या ता न स सि धि ति॥ हा न य य प श्वि म द न म हा श्व
थ म हा न ४॥ सा ना श्व वि क र कृ ता विह्वया सा धि मा स क॥
त्रि क तुः स्र डि वा क्रा स ४ जा न श्व वा व स्र क उ ४॥ क्रो ड य कं वि

१५५ मन्त्र

ज्ञातुं नृपययथुः सडि काः ४ म नृम जातः करु संम स॥ सा ला
क ३४ कं लु यत ४ स वा ष ४ स नृ फ डि क ४ प सी तो ति ष गि ॥ स वं
ग वन्द नं कृ ष जा ति रु स सं मं लि तं ॥ गु दी रु स मे कू न मि श्री तं
स प य रु त ॥ डि का या ४ क कृ य डि काः सा ग स न स तै ष डं ॥ ॥ स डं
डः श्री ख न्दः कू टः डि का वः नृ नृ नृ स या म नः ध न म स न प न प
न या नः म क कृ मा कः डि का सा य दा का या जा स स थ ॥ ॥ क्ष षा
स ग सां ता नृ म सं प्र वृ षं दि र्घ आ तो आ न व सि य का मं ग षा का

२४५

म सा रु द्वां न व द कि या धि वं द्यः सा स गं लु ति ना मा ॥ अ ध स ल सा द
ना रु प्र वा की वा मु का लां तु ल क सी म ना तु ॥ म द ४ र क थ ना दि ता र ना का
रु वा ल व ४ स र्ग स मि वृ नृ क ४ ॥ कू मा व ना धे द ना मा गु ड मा ना र
रु य ४ क कृ य ४ स ष ना तु ४ ॥ य या का नं ग ल मूल रु अ र्थ वि या ड
क ४ द र्भ द पा क सिं गो द र मा सि नी नृ डं ता नृ म ध स षा वा का मा
स सं द्या न न ष ४ ॥ ॥ मृ स कि ३४ का न मा गं क र न ४ स म द सा य र्थ ना
ता स र द ना ॥ अ थ आ य र्थ दा त्या न वा पि ता ३४ अ स र्वा गु षा नृ र्वा
नि ना व ॥ ॥ पि रु कृ या ला क म र्थ र्थि द्या नं ग ल नृ वं ग ल वा क व द कि

खदि नसु नसंम्यक डलडालविया चय ॥ सुषसु लामनडु व
 याक्यांक सुदापय ॥ डोति कु र्यु सुषु गनिक को सकेरु सानिवा ॥
 नतवा गुठिका कार्या मूषसो लारा वदनां दताष्ट गनसाग वूडि का
 गोत्रामय वव ॥ ॥ स्वयनया शा प्रसंषडा डः पूवा संकि वा डत्यन
 कः स्वयन वूडा डः कर्कः डितहा न कपुनः शयः कको साः थ नु क
 डनः स्वयन सगु ठि वि डन नस्यः दुक्त प्रायः गि नसागः गस सागः डि
 का सागः थका सागः थदाका सति ग्य ॥ ॥ स्वत्य वदिसादि ॥ गस

२२५

निसादि क हो व मुक्ति नो प्रष्य मां संवत से व श्मनि नो ॥ प्राय संसा
 धके ले सु थां क ले नि हं त्य मृत्वा धि प्रियं हि ता हि लि ॥ ॥ डि का समं ना
 त सं म द ल्मा तुः मां सां क सां क ० नि प्रा धि ना यः सा सा दि ल्पी धा नु क न यु द
 वा वा ता त म का य वुं दु वे ग म थं ट मं क्षा ॥ ॥ डि वां मे मा डि य वि ह हं वा का
 नो वृ ष्ठा ना पि लु नि मि लु जा वा ॥ ॥ अ ता नि प्रा धा न न नो न्य ता व मि नां क
 सा न पा क स मृ ह वा वः गं ति य या को यी अ नि वा र्य वी र्याः ति दा य त्रिं गं ति
 त म्भ नि ता वा ॥ ॥ हू टे वि ता पि लु स मा न सिं गः सा ध्वा पु दि द्या वृ धि

गान्धिका तु ॥ ॥ का लासि मातुं करु संरुवाग्रानि नृत्तस कल्ल कप
 र्क्षक ॥ खस ४ सि ४ समुं नियात सा ध्याः संकं ० सा नृक गलि वृद
 नि ॥ डि काग्र नृपं ४ यथ ४ कला ग डि काग्र नि द्वा दपि नृक मि अ
 ह्या पि डि का खस साग नृष विव द्वा यदा गत या क मन ॥ व सा म नृवा न
 त मुं नृत व श्व र्थ क प्रा यत ग ति नि वा र्थी त सर्व थे वा यु ति व र्थ वि र्थ वि व
 कु नि य व ल उ व द कि ॥ ग स व श्व र्थ क नृ ४ वृ द्वा श्व र्थी गो व स न
 जी य व वं म म्मि दं दृ व न म व मा ह व सा स सं हं नि यू ना वि का र्थ ॥ व

२४०

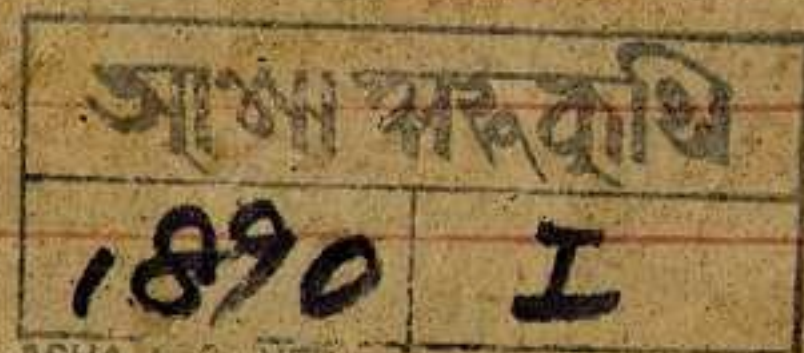
हा च नाग ४ खय थ ४ सदा ह ४ सकं ४ प्रा या क म द गु न व ना मे क वृ दं ४ य
 नि क र्थी न सो व्या वि व ना स ४ कृत ४ य ह न ॥ सम नृत व न म म न द रा हं ती
 वृ क्त सं वृ द म् द रा ह न कि न वा पि पि कं क न ड पु का या ह्यं स ग दा य व ना
 न डं ३ ॥ व डि घ ना कं ० वि प्रा वि नि क वि ला ति मा तुं पि सि नृ य सा हे ३ ॥
 म न क नृ आ न ह नि रि प दा वा ह्या ग न द्यो व न म न द्यो नृ या ॥ ग डि
 ज स स्वा म न का सि मा तुं सि ला त्र नृ यं ४ करु पि रु नृ य ३ ॥ श न कृत
 सक मि वा स न व स ग म्मु सा ध्य मु गि ना य स ह ॥ सर्व ग सं वा य म

ह

क्लिप्ताय ४८॥ १५॥ नू ४८॥ सन्निव ४८॥ सर्व ॥ सत् सर्व ॥ दाया गत्
 विड धिन्नु नये व दु ल्य ४८॥ सर्व ॥ गत् दा को स
 व्याप न पं. जाय न पं मं ४८॥ व स्या क. सक न रि न द न्न थ स
 व द ष ४८॥ जाय न पं गत् न विड धि धाय. सन्नि घा न. विड २४०
 धि धा उ ल्य ॥ १५॥ १५॥ म हान क ४८॥ ना व न धि ती व ४८॥
 ना वा य ग न नि हं का क र न जा गा न धि ना चि न न ग ल ग लो
 य ल रि धि य न तु ॥ य स्ता म्भ ना त ४८॥ य सि नि व स क्ता रि न ४८॥

स सं सा म धुः वा स स्मा वा भ नि डा डा सिंग स व यः आ रिं ग ल्म या य म द
 याः ना ड रिं आ रिं ग न्म या य रु यि डा ॥ भि ना रिं द्या ना द थ वा नि म र्क
 ना ड स प्प वा का द थ वा पि वि ड ध ४८॥ व द्धि पू यं ४८॥ व ल्म नि ला दि न ४८॥
 सक र्क सं भ वं ति व कि लि तं ॥ न स प्प वं व मा न या ४८॥ स को डै य न
 य त रु भ व नं पू ति ना ग्ग वू क र्क भु स ह सो ष धी ॥ डि रिं स्या नः वा
 न या ति स क सि क्ता डा डाः द्र स म्भ या त स थ न नं द्र स इ व ड क क्क डा
 डा द्र स दि डा व क र्क भु स आ दि नं मा क ४८॥ स न थ ॥ मा नू त ४८॥

रु संयुक्तः कर्णक इ क प्रातिवः विगायश्च विगतः स्याद्वायन
कर्णक उथक ॥ ॥



ASHA A. VES

२१०